सामर्थ्य के साथ पुत्र और पुत्रियाँ

फ्रैंकलिन के द्वारा

1 कुरिन्थियों 4:20 **परमेश्वर का राज्य** बातों में नहीं परन्तु **सामर्थ्य** में है।

पौलुस ने कहा : 1 कुरिन्थियों 2:4-5 मेरे वचन, और मेरे प्रचार में **ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं**, **परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था**, 5 इसलिये कि **तुम्हारा विश्वास** मनुष्यों के **ज्ञान पर नहीं**, परन्तु **परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।**

- बहुत से लोग चमत्कारों और चंगाइयों को **देखकर** विश्वास में आते हैं।

यीशु हमारा उदाहरण है :

रोमियों 1:3-4 अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी; वह शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण **सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।**

- यीशु के विषय में यह बताया गया, और उसकी गवाही और प्रमाण यह होने का है -> कि वह **सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र है।**
- उसने बीमारों को चंगा किया/ अंधों को दृष्टि दी/ मृतकों को जिलाया/ दुष्टात्माओं को निकाला/ आंधी को शांत किया/ वह पानी पर चला/ उसने भोजन को कई गुणा बढ़ाया/ पानी को दाखरस बनाया/ और ...
- **हम परमेश्वर की सन्तान** (गलातियों 4:1) **या सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र** (परिपक्व) हैं, और हम मसीह के साथ मृतकों में से जिलाए भी गए हैं। (इफिसियों 2:5-6 रोमियों 6:4)
- इस बिंदु पर, जब हमारा नया जन्म होता है, तो हमें संतान समझा जाता है। इसलिए कि परमेश्वर का आत्मा हमें "परमेश्वर की बातों" को **सिखाता** है, उसमें हमारी **अगुवाई** करता है और हमें **दिखाता** है। हमारे पास शिशु बने रहने का कोई बहाना नहीं है, सिवाय इसके कि हम पवित्र आत्मा को "बुझा रहे हों*" (1थिस्सलुनीकियों 5:19), और जंगलों में रहते हुए उसी पहाड़ के बार-बार चक्कर लगा रहे हों।

पौलुस ने इसके विषय में कुरिन्थियों की कलीसिया से बात की :

1 कुरिन्थियों 3:1-3 मैं तुम से **इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से**, परन्तु जैसे **शारीरिक लोगों से**, और उनसे **जो मसीह में बालक हैं**। 2 मैं ने तुम्हें **दूध** पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उसको नहीं खा सकते थे; वरन् अब तक भी नहीं खा सकते हो, 3 क्योंकि **अब तक शारीरिक हो।** इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, **तो क्या तुम शारीरिक नहीं**? और **क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते**? डाह और झगड़ा दोनों अपरिपक्वता के चिह्न हैं।

इब्रानियों 5:11-14 इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, **जिनका समझाना भी कठिन है**, इसलिये कि **तुम ऊँचा सुनने लगे हो**। 12 समय के विचार से तो **तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था**, तौभी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए। तुम तो ऐसे हो गए हो कि तुम्हें **अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए**। 13 क्योंकि **दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है।** पर **अन्न सयानों** के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते **भले-बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं**।

- हमें अपने जीवन का आंकलन करना चाहिए कि हम परिपक्व या सयाने हैं या नहीं। ऊँचा सुननेवाले? दूसरों को सिखानेवाले? क्या मैं बाइबल पढ़ता हूँ?

हमारी भी यही **गवाही होनी चाहिए।** हमारा जीवन इस बात की **घोषणा** करे कि हम **"सामर्थ्य के साथ पुत्र और पुत्रियाँ"** हैं।

यह कैसे हो सकता है? इसका उत्तर है : **आपके भीतर कौन वास करता है** और **आप के ऊपर कौन है।**

यूहन्ना 14:20 उस दिन (जब यीशु हमारे पास आता है (पद 18) और हमारा नया जन्म होता है) **तुम जानोगे** कि (1) **मैं अपने पिता में हूँ**, और (2) **तुम मुझ में**, और (3) **मैं तुम में।**

- हमारी तर्कयुक्त बुद्धि इसे किसी भी तरह संभव होने के रूप में नहीं देख सकती (1 कुरिन्थियों 2:14). **परन्तु यह एक आत्मिक सच्चाई है।**

हमें इस पर पूरी तरह से विश्वास करना चाहिए, बिना संदेह किए।

- हम यीशु में हैं/ यीशु पिता में है/ अतः हम पिता में हैं/ और यीशु हम में है। यह कितना अद्भुत है?

- इसलिए : **जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।** फिलिप्पियों 4:13

    - क्योंकि जो वचन **परमश्वर** की ओर से होता है वह **प्रभावरहित नहीं होता** लूका 1:37

यूहन्ना 14:23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "**यदि** कोई मुझ से **प्रेम रखेगा** तो वह **मेरे वचन को मानेगा**, और **मेरा पिता** उससे प्रेम रखेगा, और **हम** (यीशु और हमारा पिता) उसके पास (हमारे पास) आएँगे और **उसके साथ वास** (अक्षरशः निवासस्थान या घर) **करेंगे**।

- हम निवासस्थान, या घर बन गए, जहाँ सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर **वास** करता है!!!
- यह वह है जो आप होने के लिए रचे गए हैं! परम प्रधान परमेश्वर का मंदिर!!!

1 कुरिन्थियों. 3:16 **क्या तुम नहीं जानते** कि **तुम परमेश्वर का मन्दिर हो**, और **परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?** ये भी देखें : इफिसियों 2:19-22; 1 पतरस 2:4-45

यीशु एक अच्छा प्रश्न पूछता है : यूहन्ना 14:10 **क्या तू विश्वास नहीं करता** कि **मैं पिता में हूँ** और **पिता मुझ में है?** ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु **पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।**

- सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के साथ ये बातें **जो हम कहते हैं**, अपनी ओर से नहीं कहते... को सम्भव बना देते हैं। भविष्यवाणी, ज्ञान और बुद्धि के शब्द यहीं से आते हैं।
- पिता **हमारे भीतर रहकर** अपने काम करता है, या अपने काम हममें और हमारे **द्वारा करना चाहता है**।

11 मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।

- विश्वासी बनें ! ! !

- किसी व्यक्ति को यीशु पर विश्वास करने के लिए लाने में चिह्न और चमत्कार, या कार्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसमें बहस या वाद-विवाद शायद ही कभी कामयाब होती है।

- और यीशु ने कहा : जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ (यूहन्ना 20:21) हममें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पवित्र आत्मा के साथ!

12 मैं तुम से **सच सच** कहता हूँ कि **जो मुझ पर विश्वास रखता है**, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, क्योंकि पिता और यीशु का पवित्र आत्मा हमारे भीतर है। वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।13 जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि **पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो**।

- हम इसी लिए सृजे गए हैं!

मत्ती 10:7-8 और **चलते-चलते यह प्रचार करो** : '**स्वर्ग का राज्य** निकट आ गया है।' **बीमारों को चंगा करो**, **मरे हुओं को जिलाओ**, **कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो।** तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।

प्रेरितों के काम 1:4-8 और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो,जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। 5 क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम **पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे**। परन्तु जब **पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे**; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

- **पवित्र आत्मा** का **सामर्थ्य उन पर आएगा** - जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है - यह "उसके गवाह होने" के लिए आवश्यक है।

- बपतिस्मा का अर्थ "डुबोना" है लूका इसे इस प्रकार लिखता है : (24:49)

और देखो, जिसकी **प्रतिज्ञा** मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से ***सामर्थ्य न पाओ**, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो। ” ἐνδύω (एन-डू-ओ); तात्पर्य वस्त्र में डूब जाना; वस्त्र से विभूषित होना।

जिस प्रकार हारून सिर से पैर तक अभिषिक्त तेल से तर था : यह तो उस **उत्तम तेल** के समान है, **जो हारून के सिर पर डाला गया था**, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुँच गया। भजन 133:2

दिमाग में एक तस्वीर बनाएँ, अपने मानसिक चित्रण का इस्तेमाल करें, और देखें कि पवित्र आत्मा का अभिषेक आप पर हो रहा है, आपको हर सुबह डुबो देता है जिससे आपका जीवन यह घोषणा करे कि “आप सामर्थ्य के साथ ... सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं !

और यह कि सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह “आपमें” पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में है।

इसलिए :

- **जो** (मुझमें है और) **मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।** फिलिप्पियों 4:13
- **मैं हर पाप पर - हर बुरी आदतों पर - शरीर की हर इच्छाओं पर जयवंत होकर जीवन जी सकता हूँ ... मैं चमत्कारों और चंगाइयों को देखूंगा**
- **यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?** रोमियों 8:31
- क्योंकि **जो तुम में है** वह **उस से जो संसार में है, बड़ा है।** 1 यूहन्ना 4:4

- **जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएँ, उन में से कोई सफल न होगा,** यशायाह 54:17
- परन्तु इन **सब बातों में** हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। रोमियों 8:37
- इसलिये **प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।** इफिसियों 6:10

यह पद हमारे प्रोत्साहन के लिए है :

1 कुरिन्थियों 1:26-27 **हे भाइयो, अपने बुलाए** जाने को तो सोचो कि न शरीर के अनुसार बहुत **ज्ञानवान**, और न बहुत **सामर्थी**, और न बहुत **कुलीन** बुलाए गए। 27 परन्तु **परमेश्वर ने** जगत के मूर्खों को **चुन लिया** है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के **निर्बलों** को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे . . .

यहाँ कुछ उदाहरण हैं :
मूसा : "मैं कौन हूँ? मैं ठीक से बोल नहीं सकता। वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे।" उसने सोचा कि उसके द्वारा की गई हत्या का पाप उसे परमेश्वर और उसके लोगों के सामने उसे अयोग्य ठहराता है।
न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु **मेरे आत्मा के द्वारा** होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। जकर्याह 4:6

यिर्मयाह : "मैं तो अभी लड़कपन में हूँ, मुझे बोलना नहीं आता।" उसने सोचा कि उसकी उम्र ने उसे अयोग्य ठहराया है। परन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, "मत कह कि मैं लड़का हूँ; क्योंकि जिस किसी के पास **मैं तुझे भेजूँ** वहाँ तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ **वही तू कहेगा।** 8 तू **उनके मुख को देखकर मत डर**, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिये **मैं तेरे साथ हूँ**, यहोवा की यही वाणी है।"

गिदोन : "मेरा कुल सबसे कंगाल है, फिर मैं अपने पिता के घराने में सबसे छोटा हूँ। मैं कुछ भी नहीं।" उसने सोचा कि वह **महत्वहीन** है।

तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, "जरुब्बाबेल के लिये यहोवा का यह वचन है **: न तो बल से, और न शक्ति से,** परन्तु **मेरे आत्मा के द्वारा होगा,** मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। ज़कर्याह 4:6

एक और सच:

1 कुरिन्थियों 1:6-8 मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली यहाँ तक **कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं**, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो। मत्ती 24:14 . . . .

1 यूहन्ना 2:6 जो कोई यह कहता है कि **मैं उसमें बना रहता हूँ**, उसे चाहिए कि आप भी **वैसा ही चले** जैसा वह चलता था।

उसने बीमारों/ कोढ़ियों को चंगा किया/ अंधों को दृष्टि दी/ मुर्दों को जिलाया/ आंधी को रोका ... पानी को दाखरस बनाया ... रोटी और मच्छलियों को कई गुणा बढ़ाया

पिता आपमें है/ यीशु का पवित्र आत्मा **आपमें** है/ आत्मा के वरदान आपमें हैं ... और पवित्र आत्मा आप **पर** है।

इस पर विश्वास करें। विश्वासी बनें

आपके भीतर जो पवित्र आत्मा की अगुवाई होती है उसका अनुसरण करें, उस धीमी और शांत आवाज़ को सुनें और उसकी बात मानें ...

जैसे यीशु ने अपने शिष्यों को कहा, वह हमसे भी कहता है :

और **चलते-चलते यह प्रचार करो** : '**स्वर्ग का राज्य** निकट आ गया है।' ८ **बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं** को निकालो। तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो। मत्ती 10:7-8

चिह्नों और आश्चर्यकर्मों से यह घोषणा हो कि हम परम प्रधान परमेश्वर, हमारे पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

अतः अपने **मानसिक चित्रण** का प्रयोग करके परमेश्वर पिता और यीशु के पवित्र आत्मा को **स्वयं में रहते और वास करते हुए देखें**।

पृथ्वी पर अपने को **परमेश्वर के भवन** के रूप में देखें। आप उसकी उपस्थिति के मेज़बान हैं।

आप उसके प्रेम की घोषणा करनेवाले उसके प्रवक्ता हो। आप उसके पैर, उसकी बाजुएँ हो जो उसकी देखभाल, चिंताओं, अपनाने और चंगाई को लोगों में बाँटते हैं।

हर सुबह, अपना दिन आरम्भ करने से पहले इसे कहें :

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, **मैं मर गया!** अब मैं जीवित न रहा, पर **यीशु का पवित्र आत्मा** और **मेरा पिता मुझ में जीवित है**; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। गलातियों 2:20 अतिरिक्त शब्द जोड़े गए हैं

प्रतिदिन चमत्कारों की अपेक्षा करें

अवसरों को खोजें कि आप हमारे परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु की महिमा के लिए स्वयं को
सामर्थ्य के साथ परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ घोषित कर सकें

इस पर विचार करें : यीशु ही परमेश्वर का वचन है

यूहन्ना 1:1 आदि में **वचन** था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और **वचन परमेश्वर था**।
यीशु ही परमेश्वर का वचन है।

यूहन्ना 1:14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया,

- यीशु ने कहा और असंभव संभव हो गया।
- विश्वासी के रूप में, **यीशु जो परमेश्वर का वचन है, अब आप में वास करता है!**
- अब एक विश्वासी के रूप में, वचन देहधारी होकर हमारे **भीतर *वास करता है**
  * घर बनाकर रहना, या उस प्रकार वास करना जैसे परमेश्वर पुराने समय में निवास-स्थान में वास करता था।

- और हम परमेश्वर के भवन बन गए हैं!
  अब मैं जीवित न रहा, पर **मसीह मुझ में जीवित है** गलातियों 2:20

अतः परमेश्वर का भवन होने के नाते, आइए हम याकूब के स्वप्न पर विचार करें

1 कुरिन्थियों. 10:11 परन्तु ये सब बातें (पुराने नियम की), जो उन पर पड़ीं, **दृष्टान्त** की रीति पर थीं; और वे हमारी **चेतावनी के लिये** जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।

उत्पत्ति 28:10-17 याक़ूब ने ... 11 किसी स्थान में पहुँचकर रात वहीं बिताने का विचार किया
12 तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक **सीढ़ी** पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक

पहुँचा है; और परमेश्वर के **दूत** उस पर से **चढ़ते उतरते** हैं। 13 और **यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर** कहता है, "**मैं यहोवा** 15 **मैं तेरे संग रहूँगा**, और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ **तेरी रक्षा करूँगा**,: मैं **अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ** तब तक **तुझ को न छोड़ूँगा**।" 16 तब याक़ूब जाग उठा, और कहने लगा, "**निश्चय इस स्थान में यहोवा है**; और मैं इस बात को न जानता था।" 17 और भय खाकर उसने कहा, "यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो **परमेश्वर के भवन** को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन् यह **स्वर्ग का फाटक** ही होगा।"

- प्रभु परमेश्वर वहाँ था क्योंकि याकूब वहाँ था।

- यूहन्ना 14:23 **यदि** कोई मुझ से **प्रेम रखेगा** … **मेरा पिता** उससे प्रेम रखेगा, और **हम** (यीशु और हमारे पिता) उसके पास आएँगे और **उसके साथ वास** (अक्षरशः घर) **करेंगे।**

- रोमियों 8:9 परन्तु जब कि **परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है** (10) यदि **मसीह तुम में है** (11) यदि **उसी का आत्मा** जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, **तुम में बसा हुआ है**

- इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि ***हम परमेश्वर के भवन हैं।***

12 मैं तुम से **सच सच** कहता हूँ कि **जो मुझ पर विश्वास रखता है**, **ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा,** क्योंकि पिता और यीशु का पवित्र आत्मा हममें वास करता है। वरन् वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। 13 जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि **पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।**

इस पर मनन करें और इसका चित्रण करें!

पद **17** यह **स्वर्ग का फाटक** ही होगा।

- पुराने नियम में **फाटक** का अभिप्राय उस स्थान से है जहाँ राजा या प्रधान अधिकारी लोगों से मिलते थे, जहाँ उनके निर्णय घोषित किए जाते थे और फिर उन्हें लागू किया जाता था।

  [देखें: 2 शमूएल 19:8; यिर्मयाह 38:7-8]

  अब **परमेश्वर के भवन** के रूप में हम **खुले स्वर्ग में फाटक** पर प्रभु के साथ **मिलते** और **बातचीत** करते हैं। **जहाँ कहीं भी हम हैं वहाँ फाटक है।**

  यह परमेश्वर के साथ हमारी **प्रार्थना** या **संगति** के **महत्व** और **प्राथमिकता** को बताता है। जब हम प्रार्थना करते हैं कि **तेरा राज्य आए,** तो हम न सिर्फ उसका इस पृथ्वी पर परिपूर्णता से आने की प्रार्थना करते है (मत्ती 25:31) बल्कि यह भी कि वह इस समय भी **मेरे जीवन में** परिपूर्णता से आए। और फिर इसे अपनी इच्छा और प्रार्थना बना लें कि **तेरी इच्छा पूरी हो।**

  लूका 17:21 **... परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।"**

  हम अपने अधिकारी की इच्छा पूरी करने के लिए उसकी बात को सावधानी से सुनने और उसकी आज्ञा मानने की ज़रूरत है। (लूका 6:46) जैसा यीशु ने किया :

मरकुस 1:35 **भोर को दिन** निकलने से बहुत पहले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहाँ **प्रार्थना** करने लगा।

लूका 9:29-36 **जब वह प्रार्थना कर ही रहा था**, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा। (मूसा जब परमेश्वर की उपस्थिति में था तो उसका चेहरा चमक उठा था। ऐसे ही आपका चेहरा होगा जब आप परमेश्वर की उपस्थिति में अपना समय व्यतीत करेंगे) 30 और देखो, मूसा और एलिय्याह, ये दो पुरुष उसके साथ बातें कर रहे थे। 31 ये महिमा सहित दिखाई दिए और उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, ..पतरस और उसके साथी नींद से भरे थे, उसकी महिमा और उन दो पुरुषों को, जो उसके साथ खड़े थे, 35 तब उस बादल में से यह शब्द निकला, "यह मेरा पुत्र और मेरा चुना हुआ है, इसकी सुनो !

अंधकार की प्रधानताओं और शक्तियों के भी "**फाटक**" होते हैं, और वहाँ आज्ञाएँ दी जाती हैं। प्रश्न है -> हम किस फाटक पर ज़्यादा समय बिता रहे हैं???

मत्ती 16:18-19 और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर **अपनी कलीसिया** बनाऊँगा, और **अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे**। 19 मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ (अधिकार) दूँगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।"

दूसरे शब्दों में : उनका ज्ञान, उनका अधिकार और उनकी शक्ति कलीसिया पर **प्रबल नहीं हो सकती**।

सामर्थ्य के साथ पुत्र और पुत्रियों पर प्रबल नहीं हो सकती !

जो तुम में है वह उस से जो संसार में है, बड़ा है। 1 यूहन्ना 4:4-5

परन्तु यदि हम अभी बच्चे ही हैं तो हो सकता है कि हम ज़्यादा समय गलत फाटक पर बिता रहे हों ... 21 उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, "अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊँ, और पुरनियों, और प्रधान याजकों, और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाऊँ; और मार डाला जाऊँ; और तीसरे दिन जी उठूँ।" 22 इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।" 23 उसने मुड़कर पतरस से कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि **तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।"**

हमें परिपक्वता तक पहुँचने और "सामर्थ्य के साथ पुत्र और पुत्रियाँ" होने में जो सबसे बड़ी रूकावट है वह हमारा मन है!

पद 12 तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक **सीढ़ी** पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचा है; और परमेश्वर के दूत उस पर से **चढ़ते उतरते** हैं।

- **वे हमारे ऊपर उतरते और ऊपर जाते हैं** क्योंकि हम परमेश्वर के भवन हैं और **वह** हममें बसता है।
- यूहन्ना 1:51 यीशु ने कहा, फिर उस से कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के **स्वर्गदूतों** को **मनुष्य के पुत्र** के ऊपर **उतरते** और **ऊपर जाते** देखोगे।"

मत्ती 3:16 और यीशु **बपतिस्मा** लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई : "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"

जब आपने विश्वास किया और बपतिस्मा पाया तो **आपके लिए स्वर्ग खुल गया** और परमेश्वर ने यह कहा, यह मेरा प्रिय पुत्र या पुत्री है जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।

जहाँ **परमेश्वर का भवन** है, वहाँ **खुला स्वर्ग** है और स्वर्गदूत हमारे भीतर वास करनेवाले परमेश्वर के पुत्र के ऊपर वहाँ आते और ऊपर जाते हैं।

तो, हमारे स्वर्गदूत क्या कर रहे हैं? भजन 91:9-13 तू ने जो परमप्रधान को **अपना धाम** मान लिया है,10 इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु:ख **तेरे डेरे (घर)** के निकट आएगा। 11 क्योंकि **वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा,** कि जहाँ कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें। 12 वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे। 13 तू सिंह और नाग को कुचलेगा, तू जवान सिंह और अजगर को **लताड़ेगा**। (देखें रोमियों 16:20)

- इब्रानियों 1:14 क्या वे सब सेवा **टहल करनेवाली आत्माएँ** नहीं, जो उद्धार पानेवालों के लिये **सेवा करने को भेजी** जाती हैं?
- प्रकाशितवाक्य 22:8-9 स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "देख, ऐसा मत कर; क्योंकि मैं तेरा, और तेरे भाई भविष्यद्वक्ताओं, और इस पुस्तक की बातों के माननेवालों का **संगी दास हूँ।**

स्वर्गदूत हमारी प्रार्थनाओं को स्वर्ग में सिंहासन के सामने ले जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:8) और वहाँ से हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर लेकर लौटते हैं, और उस कार्य को करते हैं जो उन्हें करने को कहा जाता है, जैसे उत्पत्ति 19:1 में हम लूत को बचाने के कार्य में देखते हैं।

बिल जॉनसन के अनुसार :
"ऐसी जीवनशैली जहाँ प्रार्थना, विश्वास और असंभव को करने प्रयास होता है, उसकी सीढ़ी पर कम भीड़-भाड़ होती है और संरक्षक स्वर्गदूतों के लिए ज़्यादा कुछ करने को नहीं होता।"

उत्पत्ति 28:13 और **यहोवा उसके ऊपर खड़ा होकर कहता है, "मैं यहोवा हूँ....**

- एक ऐसा दिन था जब परमेश्वर ने आपसे अपना परिचय कराया!
- उसने यह परिचय हर एक को नहीं दिया। लेकिन जिन्हें यह परिचय दिया गया उनके लिए यह बड़ी आशीष है

मत्ती 16:16-17 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" 17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; **क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता** ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।

इफिसियों 1:17-18 ... कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का **पिता** है, **तुम्हें अपनी** पहचान में ज्ञान और **प्रकाश की आत्मा दे**

सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर अपना ज्ञान और प्रकाशन उन्हीं को देता है जिन्हें वह चुनता है। जब याकूब को स्वप्न आया तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह विश्वासी नहीं था।

उत्पत्ति 28:18-22 भोर को याक़ूब उठा, और अपने तकिए का पत्थर लेकर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके सिरे पर तेल डाल दिया। 19 उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा; पर उस नगर का नाम पहले लूज था। 20 तब याक़ूब ने यह मन्नत मानी, "यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे, 21 और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊँ; तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा।

उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया था। इफिसियों 1:4

यशायाह 43:1 हे इस्राएल, तेरा रचनेवाला, और हे याकूब, तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, "मत डर, क्योंकि **मैं ने तुझे छुड़ा लिया** है; **मैं ने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है।** (यहाँ अपना नाम डालें)

उत्पत्ति 28:15 **मैं तेरे संग रहूँगा**, और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ **तेरी रक्षा करूँगा,** ... **मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझ को न छोड़ूँगा।"**

- मत्ती 28:20 **मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।**

- फिलिप्पियों 1:6 जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।. . .

मैं तुम्हें सम्भालूँगा

- यूहन्ना 10:27-28 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं; 28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। **वे कभी नष्ट न होंगी**, और **कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।**

मैंने तुमसे प्रतिज्ञा की है

- प्रेरितों के काम 2:39 क्योंकि यह **प्रतिज्ञा तुम,** और **तुम्हारी सन्तानों,** और **उन सब** दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने **पास बुलाएगा।**

- 2 पतरस 3:13 पर **उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार** हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।

उत्पत्ति 28:16 **तब याक़ूब जाग उठा,** और कहने लगा, **"निश्चय इस स्थान में यहोवा है;** और **मैं इस बात को न जानता था।"**

- मेरे साथ ऐसा कितनी बार हुआ है? आपके साथ?
- अपने में और अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति से बिलकुल अनजान होना बहुत ही सहज बात है।

- कई दिन और घंटे अपने मन को उन बातों पर केन्द्रित करने पर निकल जाते हैं कि मुझे क्या करना है और फिर बाद में हमें उन अवसरों को खो देने का एहसास होता है कि हम अपने जीवन से यह घोषित कर सकते थे कि मैं सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र हूँ।

- रोमियों 13:11 **समय को पहिचान कर** ऐसा ही करो, इसलिये कि अब **तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है**; क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।

- 1 थिस्सलुनीकियों 5:6 इसलिये हम दूसरों के समान **सोते न रहें**, पर **जागते** और सावधान रहें।

- मरकुस 13:35-37 **इसलिये जागते रहो,** क्योंकि **तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी** (समझ गए) **कब आएगा,** साँझ को या आधी रात को, या मुर्ग़े के बाँग देने के समय या भोर को। 36 ऐसा न हो कि वह अचानक आकर **तुम्हें सोते पाए।** 37 और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ **: जागते रहो!"**

उत्पत्ति 28:17 और भय खाकर उसने कहा, **"यह स्थान क्या ही भयानक है!"**

रूपक के तौर पर **वह आपसे बात कर रहा है -> आप वह अद्भुत स्थान हो जहाँ सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर वास करता है, जहाँ स्वर्ग खुला है और जहाँ स्वर्गदूत उतरते और ऊपर जाते हैं ... आप ...**

परमेश्वर के भवन हैं !

इस पर विश्वास करें! विश्वासी के रूप में जीवन जीएं

पिता परमेश्वर और यीशु मसीह के पवित्र आत्मा को **अपने भीतर दिन प्रति दिन रहते और वास करते हुए** देखने के लिए अपने **मानसिक चित्रण** का प्रयोग करें।

अपने को भूल जाएँ। अपना क्रूस उठाएं, आप मर चुके हैं

क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन **मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।**

(कुलुस्सियों 3:3; रोमियों 6:3-5)

इसका चित्रण करें!

उसी का आत्मा जिसने **यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है** (रोमियों 8:11)

अतः .... **पुनरुत्थित जीवन** आपमें से उमड़ पड़ेगा और प्रेम से प्रेरित होकर आप वह सब करेंगे जो प्रभु ने अपने शिष्यों को करने के लिए कहा था :

परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो, बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो। **शोक करनेवालों को सांत्वना दो, कंगालों की सुधि लो, अनाथों और विधवाओं की सहायता करो**... कुछ भी ज़रूरत हो :

यह **घोषणा** करो कि आप सामर्थ्य के साथ पुत्र और पुत्रियाँ हैं और

प्रति दिन आश्चर्यकर्म देखने की अपेक्षा करते हैं!

इस पर विश्वास करें! विश्वासी का जीवन जीएं

इसकी घोषणा करें और प्रकट करें!

यीशु मसीह और सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का आत्मा मुझ में है! इसलिए ....

- पवित्र जीवन जीने का सामर्थ्य मुझ में है
- प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम का जीवन जीने का सामर्थ्य मुझ में है।
- पवित्र आत्मा के वरदान मुझ में हैं
- परमेश्वर के आत्मा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, कि मैं बंदियों को छुड़ाऊं, अंधों को दृष्टि दूँ, टूटे हुओं को चंगा करूँ, बीमारों को स्वस्थ करूँ और यहाँ तक कि यदि उसकी इच्छा में है तो मृतकों को भी जिलाऊँ।
- **जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।**

फिलिप्पियों 4:13

- मैं पाप पर - सब बुरी आदतों पर - शरीर की सब इच्छाओं पर जय पाकर विजयी जीवन जी सकता हूँ ... मैं चमत्कार और चंगाइयों को देखूंगा 1 कुरिन्थियों 15:57.

- **यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?**

  रोमियों 8:31

- **क्योंकि जो तुम में है वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।**

  1 यूहन्ना 4:4

- **जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएँ, उन में से कोई सफल न होगा**

  यशायाह 54:17

- **परन्तु इन सब बातों में** हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। रोमियों 8:37

- इसलिये प्रभु में और **उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।**

  इफिसियों 6:10

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

1 कुरिन्थियों 15:57